

class - B.A. Part - II

Sub - Hindi (Hon) Paper - III

by Rakesh Kumar

- ① द्वायावादी काव्य की भाषागत एवं शैलीगत विशेषताओं पर प्रकाश डालें।
 उत्तर - प्रत्येक युग के साहित्य की अपनी-अपनी विशेषता होती है। द्वायावादी काव्य की भी अपनी एक खास विशेषता है। डॉ० नगेन्द्र ने द्वायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विरोध' कहा है। विभिन्न आलोचकों ने द्वायावाद को द्वितीय युग की इति-वृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया का परिणाम कहा है। स्वयं कवि प्रसाद ने संस्कृत प्रयोगों के साक्ष्य के आधार पर 'द्वाया' की व्याख्या करते हुए कहा था - 'द्वाया भारतीय दृष्टि से अहंभूति और अभिव्यक्ति की मंजीमा पर अधिक निर्भर करती है।' यहाँ द्वायावादी काव्य की शैली और इसके शिल्प को देखते हुए ये बातें ठीक लगती हैं। द्वायावादी काव्य मुख्यतः गणितिकाव्य है। द्वायावादी काव्य में सुक्ताक गीतों और लंबी कविताओं की प्रधानता है। इन लंबी कविताओं की भाषा की विशेषता है - वक्रता, व्यांजना का प्रयोग, बाँ को सांकेतिक शैली में कहना -
 "वह मेरी प्रेम सिँहसल में जागो, मेरे मधुबन में, व यहाँ प्रातःकालीन सिँहों के बीच जागरण खेल का निरुण है। यह जागना केवल लीद से जागना

नहीं वलिक चेतना के स्तर पर जागना है।

हायावादी काव्य में अलंकारों का प्रयोग चमत्कार पैदा करने के लिए नहीं, कथन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए किया गया है। कामायनी की पंक्ति है "सिंदु सज पर घरा बधू अब तमिळ संकुचित खोटी सी।" यहाँ रूपक भी है और पृथ्वी का चित्रण बधू के रूप में करके उसका मानवीकरण किया गया है।

अनुभूति की तीव्रता, रम्य कल्पना और भाषा की वक्रता तथा गतिमयता ने हायावाद का अभूतपूर्व गौरव प्रदान किया है। हायावादी कविता में पुनर्जागरण की चेतना अव्यंत महत्वपूर्ण है। शक्ति के आह्वान के रूप में अनेक महत्वपूर्ण कवितारत्न इस युग में लिखी गयीं हैं।

हायावादी कविता ने अपनी पूर्वपकी काव्य की परिपाटी से अनेक स्तरों पर सुक्ति पाई है। कविता की विषयवस्तु, भाषा-शैली के साथ-साथ यह जान-बूझ पर भी लागू होती है। परंपरागत छंदों के यथारूप प्रयोग, उनमें बदलाव से लेकर मुक्त छंद तक का प्रयोग इन कवियों ने किया है। निराला मुक्त छंद के आरंभकर्ता माने जाते हैं। गौरी प्रकाश मुखर्जी छंद की ही कविता है।